2017-18

साहित्य और सिनेमा

Literature & Cinema

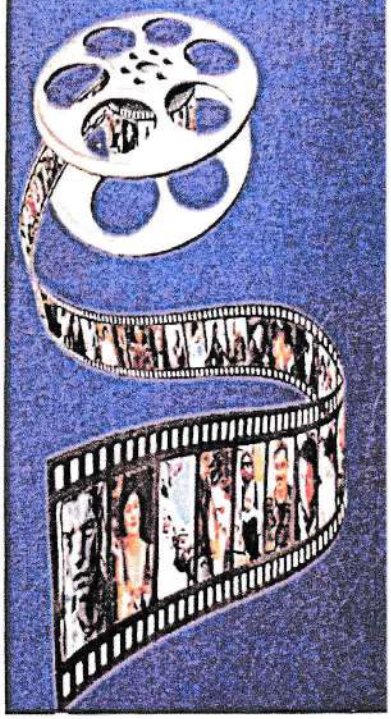

सम्पादक (हिंदी)
डॉ. शीला भास्कर
Editor (Hindi)
Dr. Sheela Bhaskar

सम्पादक (अंग्रेजी):
श्रीमती स्वपना के. जाधव
Editor (English)
Smt. Swapna K. Jadhav

साहित्य और सिनेमा

Literature & Cinema

प्रधान संपादक (हिंदी)

डॉ. शीला भास्कर

विभागाध्यक्ष - हिंदी विभाग,

श्री शरण नुलीय चंदय्य

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रथम दर्जा कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

गंगाधर नगर, हुब्बल्ली - 20 कर्नाटक

Main Editor (English)

Smt. Swapna K. Jadhav

Head, Dept. of English

S.S.N.C. Dr. B.R. Ambedkar First Grade

Arts & Commerce College, Hubballi.

भास्कर आर्ट मीडिया, हुब्बल्ली - 21

साहित्य और सिनेमा

(20 जनवरी 2018 को आयोजित
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सग्रहीत आलेख)

ISBN : 978-93-5291-910-9

प्रधान संपादक	:	डॉ. शीला भास्कर (हिंदी)
कॉपी राइट	:	संपादकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2018
शब्द सज्जा एवं मुद्रक	:	भास्कर आर्ट मीडिया, हुब्बल्ली
मूल्य	:	₹ 500.00

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगें ही ऐसा नहीं है।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं। अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

48. "हिंदी साहित्य, समाज और सिनेमा" 15
• प्रा. डॉ. सुनिता जगन्नाथ गायकवाड

49. हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त फिल्मी कलाकार नारी जीवन 153
(संदर्भ : सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास-मुझे चाँद चाहिए)
• डॉ. दुर्गारत्ना सि

50. साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा 163
• लैप्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील

51. हिन्दी सिनेमा में नारी चित्रण 163
• डॉ. अनीता. एम. बेलगांकर

52. हिन्दी साहित्य और सिनेमा 167
• डॉ. महातेंश. आर. अंची

53. हिंदी सिनेमा में हरफनमौला व्यक्तित्व : कवि प्रदीप 169
• विकास विलासराव पाटील

54. साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा 173
• प्रो. प्रकाश आठवले

55. रजनीगंधा फिल्म में चित्रित स्त्री का मानसिक द्वन्द्व 176
• फिरोज वालसिंग

56. भारतीय सिनेमा में चित्रित नारी के विविध रूप 178
• सोनाली तेरदाले

57. हिन्दी सिनेमा को कवि प्रदीप का योगदान 179
• डॉ. दयानंद सालुंके

58. बदलते सामाजिक परिवेश में हिंदी सिनेमा 182
• वीणादेवी देशपांडे

59. हिंदी सिनेमा में स्त्री विमर्श 184
• रीता कुमारी

60. विश्व स्तर पर हिंदी चलचित्र का स्थान और हिंदी के कुछ साहित्यकार 186
• डॉ. हरिदास्यं रमादेवी

61. हिन्दी साहित्य और हिन्दी सिनेमा का परस्पर संबंध 188
• डॉ. गट्ला रमेश्वावु

62. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी सिनेमा 191
• एन. वंशीकृष्णा

63. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी सिनेमा: दशा एवं दिशा 193
• शेक सादिक पाषा

64. साहित्य, समाज और सिनेमा का अर्न्तसम्बंध 195
• वीरेश .बिसनल्लि।

50

साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा

लैप्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज,
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

साहित्य और सिनेमा दोनों समाज का आईना है। आज की तारिख में जनसंचार माध्यमों में सबसे प्रभावशाली माध्यम दृक्–श्राव्य माध्यम है। जिससे किसी भी जाति, वर्ग, समुदाय, धर्म, संस्कृति के लोग सीधा प्रभावित होते हैं। साहित्य और सिनेमा दोनों पाठक एवं श्रोता के मन में चेतना जगाते हैं, और उन्हें सोचने के लिए मजबुर करते हैं। जहाँ साहित्य समाज का दर्पण हैं वहीं दूसरी ओर सिनेमा समाज की वास्तविकता के जड तक पहुँचने का काम करता है।

भारतीय साहित्यकारों ने आरंभ से ही स्वतंत्रता संग्राम, देश–विभाजन की त्रासदी, राजनीति, संस्कृति, युद्ध, देश–प्रेम, किसान, मजदूर, जमींदार, प्रेम, परिवार आदि अनेक विषयों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की है। यह साहित्य तत्कालीन समाज का आईना बनकर उद्घाटित होता है। इसमें प्रादेशिक साहित्य का भी बहुत बडा योगदान रहा है। साहित्य की तुलना में भारतीय सिनेमा जगत का कालखंड छोटा है। परंतु सौ साल के इतिहास में वह काफी प्रभावी रहा है। 04 मई, 2014 को इसने सौ साल पूरे किए है।

भारतीय फिल्म जगत के पितामह दादासाहेब फाळके द्वारा निर्मित 'राजा हरिश्चंद्र' से भारतीय सिनेमा युग का आरंभ हुआ। तबसे लेकर आज तक हिंदी सिनेमा का विकास निरंतर जारी है। इनमें वी शांताराम, आर्देशिर ईरानी, बाबुराव पेंटर, राजकपूर, श्याम बेनेगल, बी.आर. चोपडा, केतन मेहता, गिरीश कर्नाड जैसे अनेक फिल्म निर्माता एवं निर्देशकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

हिंदी साहित्य जगत और फिल्म जगत का अटूट रिश्ता है। कथानक, काव्य, गीत, चरित्र, घटना आदि को सिनेमा में स्थान प्राप्त है हुआ है। प्रेमचंद्र, फणीश्वरनाथ रेणू, विमल रॉय, बकिमचंद्र, शरतचंद्र, श्रीलालशुक्ल, भगवतीचरण वर्मा, आ.चतुरशेन शास्त्री, कमलेश्वर, धर्मवरी भारती, मन्नु भंडारी, हिमांशु जोशी, देवकीनंदन खत्री, उषा प्रियवंदा, सुरेंद्र वर्मा आदि साहित्यकारों के साहित्य पर फिल्म बने हैं। जिसमें विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है।

विभाजन की त्रासदी:– भीष्म सहानी लिखित 'तमस' भारत–पाकिस्तान के विभाजन की वास्तविकता का बयान करती है। 'तमस' सन् 1947 देश को आजादी, अँगेजों की कुटनीति, बँटवारा और हिंदू मुसलमानों में हुई सांप्रदायिक दंगों की आपबीती है। विवेच्य उपन्यास में सुअर और गाय को बेचने का पुण्य और पाप का वास्तव चित्रण है। मुरादअली जैसे पात्र सांप्रदायिकता को बढावा देते हैं। नुत्थु के हाथों सुअर मारने की घटना के बाद शहर में हर–हर महादेव और अल्ला हो अकबर की गूँज सुनाई देती है। वानप्रस्थजी मास्टर, देवव्रत, रहीम तेली जैसे धर्मांध लोगों का चित्रण हुआ है। 'तमस' राजनीतिक का सांप्रदायिकरण है।

"हिंदू–मुसलमान कहते हैं", "वंदे मातरम् ।" "बोलो भारत माता की जय।" इसके बाद क्षणभर की चुप्पी थी, एक और नारा उठा।"

"पाकिस्तान–जिंदाबाद ।" "कायदे आजम जिंदाबाद।"[1] हिंदू समझते है । 'मुस्लिम लीग' मुसलमानों की जमात है। मुस्लिम समझते हैं 'कॉंग्रेस' हिंदूओं की जमात है। पूँजीपतियों का आपसी गठबंधन और जबरदस्ती धर्म परिवर्तन का चित्रण प्रस्तुत है।

विवेच्य उपन्यास पर सन 1988 में निर्देशक गोविंद निहलानी ने 'तमस' फिल्म बनाई। इससे एक साल पहले 1987 धारावाहिक के रूप में दूरदर्शन से प्रसारित होती रही परंतु आंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में काफी चर्चा का विषय बनी। उपन्यास की तुलना में फिल्म की काफी चर्चा हुई। इसके संदर्भ में डॉ. शैलजा भारद्वाज लिखती है, इसमें लेखक और फिल्मकार ने हिंदुओं, सिक्खो और मुसलमानों के आपसी वैमनस्य का, उस वैमनस्य के कारणों, परिणामों से जुडे हिंदुओं और मुसलमानों के आपसी वैमनस्य का, उस वैमनस्य के कारणों, परिणामों से जुडे संदर्भों का वास्तविक चित्रांकन अपनी कृति और फिल्म में किया है।[1]

स्त्री-विमर्श और हिंदी सिनेमा :- खास तौर से हिंदी के नायिका प्रधान उपन्यासों में नारी विमर्श का चित्रण भारी मात्रा में पाया जाता है। फिल्म निर्माता एवं निर्देशकों ने फिल्मों में इन्हें उचित स्थान भी दिया है। कमलेश्वर, मन्नु भंडारी जैसे सुप्रसिद्ध रचनाकारों के रचनाओं पर अनेक चर्चित फिल्में बनी है। सन् 1962 में प्रकाशित श्डाक बंगलाश्उपन्यास पर 'डाक बंगला' नाम से चर्चित फिल्म बनी। इसमें लेखने 'इरा' नामक युवती के जीवन की यथार्थता को उद्घाटित किया है। 'इरा' सच्चे प्यार की तलाश में है लेकिन उसे कभी सच्चा प्यार नहीं मिलता।

'इरा' उपन्यास की केंद्रीय पात्र है। तिलक, सोलंकी, बतरा, विमल और डॉ.चंद्रनान आदि पात्र प्रसंगानुसार आते हैं। उपन्यास के एक प्रसंग में इरा कहती है, "एक राजकुमार ने मुझे एक सितारा दिखाया था....सबसे बडा सितारा..........जो डबडबाई आँख की तरह चमक रहा था। आज मुझे यह सच लगता है।"[3] विवेच्य उपन्यास में 'इरा' की स्थिति का संबध सीधा सामाजिक व्यवस्था से जुडी है। वह अनेक पुरूषों से पीडित और परिस्थिति से संघर्ष करते हुए भी हर-बार नए ढंग से हँसती हुई अपने आपको प्रतिष्ठित करते हुए नजर आती है।

'काली आँधी' सन् 1974 में प्रकाशित चर्चित उपन्यास है। बाद में इस पर गुलजार के निर्देशन ने सन् 1975 ने "आँधी" फिल्म बनी इसके केंद्र में असफल दाम्पत्य की करूण कहानी चित्रित है। नायिका मालती राजनीति में सफल हुई है परंतु पारिवारिक जीवन में असफल रही है। गुलजार ने इसमें वस्तुविण्यास को जीवित रखा है। सिनेमा के सीमांओ को ध्यान में रखते हुए अनावश्यक प्रसंगों को छोड दिया है।

"शतरंज के खिलाडी" मुन्सी प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है। विवेच्य कहानी पर सत्यजीत रे ने फिल्म बनायी इसमें लखनऊ शहर के ठाठ एवं विलासिता का वर्णन है। धनवान हो या गरीब भिखारी अफीन और शराब की नशा को किस प्रकार अपनाते हैं। इसका किमत उनको किस प्रकार चुकाना पडता है इसका चित्रण प्रस्तुत है।

'मन्नु भंडारी' की 'यही सच है' कहानी पर 'रजनीगंधा' फिल्म बनी। इसमें नायिका दीपा की त्रिकोणीय प्रेम कहानी प्रस्तुत है। इस फिल्म में दो प्रेमियों के बीच स्त्री की मानसिकता का चित्रण है।

'फणीश्वरनाथ रेणू' की 'तिसरी कसम' कहानी पर सन् 1966 में फिल्म बनी। इसमें उत्तर भारत के ग्रामीण अँचल और वहॉ के लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थिति पर प्रकाश डाला है।

बंगला साहित्य के जानेमाने साहित्यकार शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय के 'परिणीता' उपन्यास पर चर्चीत सामाजिक फिल्म बनी। इसमें पुत्री जन्म और विवाह के समय की दहेज प्रथा जैसे विषयों को केंद्र में रखा गया है।

प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास पर मन्नू भंडारी ने दूरदर्शन के लिए कथानक तैयार किया। इसमें दहेज और अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित किया है। पिता के अभाव में बेटी का विवाह संपन्न करना माँ के लिए कितना कठिन है इसका चित्रण है।

संदर्भ संकेत :— 1. सं.डॉ.शैलता भारद्वाज, साहित्य और सिनेमा, पृष्ठ 286
2. भीष्म सहानी, तमस, राजकमल प्रकाश, नई दिल्ली प्रथम सं.1973, पृष्ठ 86
3. कमलेश्वर, डाक बंगला, राजपाल ॲन्ड सन्स, नई दिल्ली, सं.1993, पृष्ठ 26.